Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तुलसीदल

८४.०१
३२६

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

८8.09
३२६

103892

८8.09/३२६
पुस्तकालय 103892
गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय
विषय संख्या ______ आगत नं० ______
लेखक द्विवेदी सोहनलाल
शीर्षक जलवीदल

दिनांक	सदस्य संख्या	दिनांक	सदस्य संख्या

गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय
कृपया पुस्तक के ऊपर कोई निशान आदि न लगायें।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

२८.०१
३२६

पुस्तकालय

गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय, हरिद्वार

103892

वर्ग संख्या........ आगत संख्या..........

पुस्तक-विवरण की तिथि नीचे अंकित है । इस तिथि सहित ३०वें दिन तक यह पुस्तक पुस्तकालय में वापिस आ जानी चाहिए अन्यथा ५० पैसे प्रति दिन के हिसाब से विलम्ब दण्ड लगेगा ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मानस संगम रजत जयंती वर्ष

तुलसीदल

डा० धर्मपाल, कुलपति द्वारा
प्रदत्त पुस्तक संग्रह

103892

सोहनलाल द्विवेदी

प्रकाशक
बद्रीनारायण तिवारी
संयोजक

मानस संगम

महाराज प्रयागनारायण मन्दिर
(शिवाला), कानपुर-२०८००१
दूरभाष : ३६२६७८, ३१७८३८

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar,

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रकाशक :
बद्रीनारायण तिवारी
अध्यक्ष/संयोजक
मानस संगम, कानपुर-२०८००१

८४.०१
३२६

सर्वाधिकार :
सोहनलाल द्विवेदी

द्वितीय संस्करण : ३०० प्रतियाँ विद्वानों में वितरण हेतु

सम्वत् २०५० विक्रमी

१९
९१

मूल्य :
सात रुपये
बीस रुपये (सजिल्द पुस्तकालय संस्करण)

TULSIDAL
BY SOHAN LAL DWIVEDI

मुद्रक :
विनीत प्रेस
१०८/२७, लेनिन पार्क
कानपुर-२०८०१२

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तुलसी - साहित्य के गहन अध्येता

भारत विश्रुत मानस-मर्मज्ञ

तथा

भारतीय धर्म, दर्शन और संस्कृति

के उद्भट विद्वान

एवं

अमृत - वाणी के धनी व्याख्याता

पूज्य

पं० रामकिंकर जी उपाध्याय

के कर - कमलों में यह

तुलसी-दल

श्रद्धा सहित समर्पित है।

103892

—बद्रीनारायण तिवारी

प्रकाशक एवं संयोजक

मानस-संगम, कानपुर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अनुक्रमणिका

१. आत्म-कथ्य ·· सोहनलाल द्विवेदी ··· १
२. आमुख ·· डा० यन० रामन नायर ··· ३
३. पं० रामकिंकर जी उपाध्याय ···बाल कवि वैरागी ··· ९
४. सहजता ही जिनकी प्रमुख विशेषता है ···बद्रीनारायण तिवारी ··· १३
५. तुलसीदास ··· ··· १७
६. गोस्वामी तुलसीदास के प्रति ··· ··· ४६
७. अकबर और तुलसीदास ··· ··· ४७

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बैकुण्ठवासी श्रीमती संपदा देवी

एवं

भ्राता श्री विजय नारायण त्रिपाठी

की

पुण्य स्मृति में

—श्री श्रीनारायण त्रिपाठी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आत्म-कथ्य

तुलसीदल जैसी लघु रचना के लिये भूमिका, एक प्रश्नचिह्न बन जाता है। उसकी पृष्ठभूमि देना ही उसका समाधान है। यहाँ गोस्वामी जी के भक्तों के लिये यह बताना भी मनोरंजक प्रसंग होगा आज से अर्धशताब्दि पूर्व, ऐसा भी समय था जब हिन्दी जगत में यह निर्णय करना था, कि हमारी भाषा का सर्वश्रेष्ठ कवि कौन है।

हिन्दी साहित्य के समीक्षाकार मिश्रबन्धु–देव को, तो बिहारी को लाला भगवानदीन अपने अकाट्य तर्कों से श्रेष्ठ सिद्ध करने में कृत संकल्प तथा कटिबद्ध थे। माधुरी में इस परिचर्चा की बड़ी धूम रही, और बड़े चाव से पाठक उसे पढ़ते थे।

यह विवाद उस समय शान्त हुआ, जब आचार्य प्रवर पण्डित रामचन्द्र शुक्ल का 'हिन्दी साहित्य का इतिहास' प्रकाशित हुआ। आचार्य शुक्ल ने समीक्षा सिद्धान्त स्थापित किये और उनके निकष पर, कसकर, यह सिद्ध किया, कि हिन्दी वाङ्मय तथा साहित्य के सर्वश्रेष्ठ कवि एक मात्र गोस्वामी तुलसीदास ही हैं, उस आसन पर दूसरा नहीं बैठ सकता। तुलसीदास तथा जायसी पर शुक्ल जी के समीक्षा ग्रंथ भी प्रकाशित हुए।

प्रस्तुत रचना के प्रेरणा पुरुष शुक्ल जी हैं जिनके श्री चरणों में बैठकर, मुझे वर्षों हिन्दी साहित्य के अध्ययन का सौभाग्य प्राप्त हुआ।

एक बार इसी रचना को सुनाने का सुयोग मिला, तो सभी ने मुक्त कण्ठ से भूरि-भूरि प्रशंसा की। बन्धुवर बद्री नारायण तिवारी की यह गुण-ग्राहकता है, कि उन्होंने इस लघु रचना को भी पुस्तक का रूप दे दिया है। वे महान हैं, जो लघु को महान बनाते हैं।

बिन्दकी —सोहनलाल द्विवेदी

जिला–फतेहपुर (उ. प्र.) १–१२–८०

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आमुख

कानपुर का श्रीप्रयाग नारायण मन्दिर पहले से एक प्रसिद्ध धार्मिक केन्द्र रहा है। इसके प्रवर्तक श्री बद्रीनारायण तिवारी अब उसको एक साँस्कृतिक एवं साहित्यिक विचार गोष्ठियों का अद्भुत संयोग स्थान बनाकर उसकी प्रशस्ति देश-विदेश में फैला रहे हैं। प्रत्येक वर्ष वहां मानस-संगम का कार्यक्रम धूमधाम से चलता है तथा देश विदेश के अनेक उद्भट् विद्वान एवं विदुषी पधार कर अपने अमूल्य विचारों से कार्यक्रम को सम्पन्न कर रहे हैं। मानस चतुर्थ शताब्दी समारोह कानपुर में गम्भीरतापूर्वक दिसम्बर उन्नीस सौ तिहत्तर को मनाया गया था जिसे पूर्णरूपेण सफल बनाने का श्रेय पं० रामकिंकर उपाध्याय तथा उनके रामचरित-मानस पाठ को प्राप्त है। मानस संगम में एकत्रित होने वाली बहुजनों की संख्या ही इसका साक्ष्य करेगी कि कानपुर निवासी किस प्रकार मानस-संगम के प्रति श्रद्धा रखते आ रहे हैं। मानस संगम के प्रवर्तक बन्धुओं का ध्येय यह भी रहा है कि मत निरपेक्ष होकर सभी धर्मों के रामभक्तों और हिन्दी विश्वासियों को एक वेदी पर एकत्रित कर दें। अनेक साहित्यिक बन्धुओं को सम्मानित करने का अनुपम लक्ष्य भी इसका रहा है।

कुछ वर्षों से मानस संगम के प्रवर्तकों ने पुस्तकाकार में विशिष्ट रचनाओं को प्रस्तुत करने का पावन कर्म आरम्भ कर दिया है। इस वर्ष महामना पं० सोहनलाल द्विवेदी की रचना 'तुलसीदल' इस समिति की ओर से प्रकाशित हो रही है। इन प्रकाशनों का लक्ष्य भी अद्भुत है। उसमें व्यवसायिक दृष्टि नहीं रखी गई है। अधिकांश पुस्तकें विद्वानों के बीच वितरित होती हैं। भारतीय परंपरा के उत्तम आदर्श से प्रेरित यह कार्यक्रम सराहनीय है।

'तुलसीदल' हिन्दी के मूर्धन्य कवि सोहनलाल द्विवेदी जी की तुलसी सम्बन्धी नवीन तथा पुरानी दोनों प्रकार की कविताओं का संग्रह है। तुलसी सम्बन्धी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उद्‌गार यद्यपि मानस चतुर्थ शताब्दी के अवसर ने हमारे आधुनिक मनीषी कवियों जैसे मैथिलीशरण गुप्त, डा० रामकुमार वर्मा, बच्चन, श्री भारतभूषण अग्रवाल आदि को स्मरण पुष्प चढ़ाते हुए अपने उद्‌गार प्रकट करने का अवसर दे दिया है। फिर भी तुलसी के महान व्यक्तित्व को प्रबन्धात्मक रूप देने का श्रेय हिन्दी के वरेण्य कवि सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला' तथा सोहनलाल द्विवेदी को ही प्राप्त है। कथा काव्यों की प्राचीन परम्परा का नवीन रूप ही इन कृतियों में दोनों कवि प्रस्तुत करते हैं। निराला जी ने अपनी विशिष्ट शैली में कथा तत्व को ओझल रखते हुए रहस्यवादी दृष्टिकोण के साथ मनोवैज्ञानिक आधार पर तुलसीदास जी की जीवनी को काव्यात्मक सौष्ठव दिया है। किन्तु सोहनलाल द्विवेदी ने प्रच्छन्नता के दोष को दूर करते हुये खुली परिनिष्ठ काव्यशैली में तुलसीदास के चरित्र का अत्यन्त सरल एवं ओजपूर्ण वर्णन किया है। दोनों काव्य इन दृष्टियों से अत्यन्त मर्मस्पर्शी हुए हैं। जहाँ निराला जी ओज गुणी सिद्ध होते हैं, अत्यन्त कठिन सामासिक पदावली का चयन करते हैं, गूढ़ मनोवैज्ञानिक स्तरों को अन्तर्द्वन्द्वात्मक कथात्मक के रूप में चित्रित करते हैं, वहीं सोहनलाल द्विवेदी ने स्वाभाविक कवि प्रतिभा का परिचय वर्णनात्मक शैली को अपनाकर तुलसी के जीवन की मुख्य एवं स्मरणीय घटनाओं का वर्णन करते हुये कविमानस की प्रतिष्ठा करते हुये तुलसी जन्म के लक्ष्य को स्थापित कर दिया है। एक हैमवती गंगा का वेग लिए हुए है और दूसरी समतल पर लघु वीचियां प्रसारित करने वाली मन्दाकिनी की मनोहारिता लिए हुए है।

निराला जी तथा सोहनलाल द्विवेदी जी अपने काव्यों का आरम्भ एक प्रकार से करते हैं। मुगलों के आक्रमण से आक्रान्त भारत में हिन्दू जनता की संस्कृति एवं जीवन में जो भारी धक्का लगता है उसका अब निराला जी जहाँ निम्नलिखित वर्णन करते हैं :–

'भारत के नभ का प्रभा पूर्ण
शीतल छाया सांस्कृतिक सूर्य
अस्तमित आज रे तमसूर्य दिङ्मण्डल
उर के आसन पर शिरस्त्राण शासन करते हैं मुसलमान;
है उर्मिल जल, निश्चलत्प्राण पर शत तल'

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वहाँ सोहनलाल जी का वर्णन देखिए—

'जब मुगल महीपों के बादल
छाये जीवन नभ में अपार
दासता, पराजय, गृह विग्रह
से गहराया तम कर प्रसार;
तब रामनाम कर अमृत ले,
आये गौरव गाते अमन्द्र
मृत हत जनता को मिले प्राण
चमके तुम बन सौभाग्य चन्द्र !'

कहते हुए काव्यारम्भ करते हैं । तुलसीदास के जीवन में घोर अन्तर्द्वन्द्व की जो घटना घटी वह विरहातुर तुलसीदास का अपनी पत्नी रत्नावली से मिलन के अवसर पर है । इसका वर्णन जब निराला जी यों करते हैं :—

'धिक धाये तुम यों अनाहूत,
धो दिया श्रेष्ठ कुल धर्म धूत,
राम के नहीं, काम के सूत कहलाए !
हो बिके जहाँ तुम बिना दाम
वह नहीं और कुछ हाड़, चाम !
कैसी शिक्षा, कैसे विराम पर आए'

तब सोहनलाल जी सरल शब्दों में—

'इस हाड़ माँस के पुतले पर
तुमको है जितनी परम प्रीति,
इतनी होती यदि राम चरण,
तो होती तुमको फिर न भीति ।'

परम्परागत कथासूत्र को पिरोने का प्रयत्न करते हैं । इसी तरह दोनों का काव्यांतर भी विचारणीय है । जब निराला जी "प्राची दिगन्त उर में पुष्कल रवि-रेखा" कहकर तुलसीदास के जीवन आलोक का जहाँ भविष्य दर्शाते हैं वहाँ सोहन लाल जी कहते हैं-"इस राष्ट्र जागरण के युग में कवि उठो पुनः तुम बन महान ।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बच्चन जैसे प्रेमगायक कवि अपने काव्य पुष्प की आरती चढ़ाते हुए गाते हैं—

'बारम्बार प्रणाम तुम्हें है, रामचरित के अमित पुजारी ।
उचित यही था प्रथम तुम्हारे,
चरणों में मैं शीश नवाता,
पर न दिया वह अवसर तुमने
हे भारति के भाग्य विधाता,
तुम पहले से आने वाले
कवियों के प्रति नत मस्तक थे,
आर्य तुम्हारे आदर का मैं वन पाऊँ कैसे अधिकारी
बारम्बार प्रणाम तुम्हें है रामचरित के अमित पुजारी ।
तुमने अपने राम-सिया में,
रसिया, सब जग देख लिया था,
कितने नयन विशाल तुम्हारे,
कितना गहन-गम्भीर हिया था;
जीवन, काल, कर्म, गति-पथ का
अंत कहाँ है ? कौन बताये ?
नहीं अभी तक पहुंचा कोई जहाँ नहीं थी पहुँच तुम्हारी ।
बारम्बार प्रणाम तुम्हें है, रामचरित के अमित पुजारी ।
वक्त हुआ जो लगन तुम्हारी
दूर लक्ष्य की ओर लगी थी,
पांव पड़ा करते थे भूपर,
आँख गगन के प्रेम पगी थी,
मग में तुमने ठुकराकर जो,
छोड़ दिया उसको अपनाकर
बहुत समयपर्यंत करेंगे अर्जन कीर्ति-कलम-कर-धारी ।
बारम्बार प्रणाम तुम्हें है, रामचरित के अमित पुजारी ।
दो मुझको वरदान, तुम्हारे
काम किसी दिन मैं था आया,
राम—भगति बहु विधि वर्णन कर
जब तुमने संतोष न पाया ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तुमने मेरी ओर निहारा
और हृदय की ताली पाई,
याद तुम्हें आया, मैं ही वह कामी जिसको नारि पियारी ?
बारंम्बार प्रणाम तुम्हें है, राम चरित के अमित पुजारी ।'

यहाँ तुलसी की वन्दना और स्तुति में उनका गीत परिणित हो जाता है। यही स्थिति हमारी युवा पीढ़ी के कवि भारतभूषण अग्रवाल की मानस चतुर्थ शती के समारोह के अवसर पर नव्य उद्गार के रूप में लिखित कविता में हम देख सकते हैं:-

तुम चाहते तो उसे झोटा पकड़ कर घसीट ला सकते थे
आखिर वह तुम्हारी व्याहता थी ।
तुम चाहते तो सारे समाज को इकट्ठा करके
अपना हक माँग ले सकते थे
आखिर वह मध्य युग था ।
हो सकता है वह कुछ दिनों तक झाँय-झाँय करती,
यह भी हो सकता है कि कुछ दिनों तक
गाँव में चर्चा का बाजार गर्म रहता
पर फिर सब शान्त हो जाता—
शान्त और थिर
ठीक पोखर के पानी की तरह
जिसकी सतह पर धीरे-धीरे सुरक्षित सुख की काई जम जाती,
और तब तुम उसके हाथ की रसोई जीमते
और उसके तन की गरमाई सेंकते
ठाठ से रत्नमंगल की रचना में लीन रह सकते थे ।
आज इस मानस चतुश्शती वर्ष में
जब ओर से छोर तक तुम्हारी जय-जय कार गूँज रही है
और भक्तगण अपनी फूल मालाओं से तुम्हें पाटे दे रहे हैं
मैं मन ही मन तुम्हारे जीवट को जाँच रहा हूँ ।
कि तुमने तन की सुविधा के लिए
मन से समझौता नहीं किया
और प्यार के मर जाने पर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गृहस्थी की लाश ढोने से इन्कार कर दिया।
यही जीवट तो 'रामचरित मानस' की नींव है।

सोहनलाल द्विवेदी ने भी १९७६ में तुलसीदल की अष्टदलीय भव्य माला गूँथ के तुलसी सम्बन्धी नवीन उद्भावनाएँ प्रकट की हैं। उसमें उन्होंने तुलसी की प्रसिद्धि का परिचय—'तुलसी तुम गूँज रहे रह–रह, गृह गृह में बनकर राम मार्ग' गाते हैं तो हमारे श्रवणों में बार–बार उसकी अनगूँज होती है। उस लघु कविता में भी लोक प्रचलित कथा को कवि प्रस्तुत करना चाहते हैं—'घनश्याम मुग्ध हो बने राम, तब झुका तुम्हारा भक्तभाल' इस नवीन सन्दर्भ में हमारे कवि को तुलसी की आत्मा से यही प्रार्थना करना शेष रहा है—

गूँजो फिर बनकर राम नाम,
रणवीरों के मन से अकाम
नवराष्ट्र जागरण के युग में
तुलसी गूँजो तुम धाम धाम

तुलसी के व्यक्तित्व उनके आत्मचरित की सुदुर्लभ घटनायें, उनकी रचना प्रसूनों की असुलभ सुगन्ध का भुक्त भोगित्व, राम के प्रति तुलसी की अचल भक्ति का उदात्त तत्व, निर्धन ब्राह्मण बालक तुलसी के अन्तिम जीवन की सिद्धिपीठ प्राप्ति, रामचरित मानस की व्याप्ति, धर्म निरपेक्षता में तुलसी साहित्य की प्रसक्ति आदि का अत्यन्त सुन्दर वर्णन करते हुए स्वतन्त्रता की मन्द ध्वनि और राष्ट्र जागरण का जपजाप करते हुए एक ओर 'तुलसीदास' नामक अपने खण्डकाव्य में सोहनलाल द्विवेदी जी अपने सरल तरलित विचार प्रस्तुत करते हैं वहां 'तुलसी-दल' में तुलसी के प्रति श्रद्धाभक्ति की तुलसी माला भी चढ़ाते हैं।

द्विवेदी जी के तुलसीदास सम्बन्धी इन तुलसीदलों को अलग माला सी गूँथकर पुस्तकाकार देने का सफल प्रयत्न श्री बद्रीनारायण तिवारी जी ने 'मानस-संगम' प्रकाशन माला में स्थान देते हुए किया है। वह उचित ही नहीं, स्तुत्य हुआ है। मैं इस 'तुलसीदल' को पाठक बन्धुओं की हृदय वेदी में इस श्रद्धा के साथ चढ़ाना चाहता हूँ कि वे इसे आत्मसात कर आनन्द के पारावार में डूबते उतराते रहें।

अध्यक्ष, हिन्दी विभाग,
कोचीन विश्वविद्यालय (केरल)
सिंधु, कोचिन–६८२०२५
विजयदशमी का दिन १८/१०/८०

डा० एन० रामन नायर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यह 'तुलसी-दल' जिनको समर्पित है–

रामचरित मानस के अद्भुत हंस

पं० श्री रामकिंकर जी उपाध्याय

□ बाल कवि बैरागी

सात बजने में चार-पाँच मिनट शेष रहते हैं और वे एकाएक मंच पर प्रकट हो जाते हैं। ठीक सात बजे वे 'श्रीराम' का उच्चारण करते हैं और उनके साथ सारा सभागार 'राम संकीर्तन' में जुड़ जाता है। सभागार के बाहर हजारों की भीड़ है। 'श्रीराम जय राम जय-जय राम' के साथ ही लोग अपनी उम्र, अपना पद, अपनी भाषा, अपनी भूषा, अपनी आकांक्षा, अपनी जाति- अपना परिवार सब कुछ भूल जाते हैं। चाहे नहीं मानेंगे पर जी हां, उस समय आप अपने पड़ोसी तक को भूल जाते हैं। दो या तीन मिनिट में ही सभागार में केवल एक ही आवाज रह जाती है। वे रामकथा का कोई भी प्रसंग उठा लेते हैं और फिर धारा प्रवाह पूरे सवा घण्टे अथक बोलते रहते हैं। रामकथा साकार हो जाती है। न वे गाते हैं न वे किसी वाद्य का सहारा लेते हैं। सवा घण्टे के इस प्रवचन में मुश्किल से चार-पाँच चौपाई वे यहाँ-वहाँ से संदर्भ सहित उद्धृत करते हैं। पर श्रोता सुधि बिसराकर केवल सुनते रहते हैं। अस्सी मिनिट अस्सी पल की तरह बीत जाते हैं। उनकी शैली, उनकी संवाद क्षमता, उनकी भाषा और उनकी विवेचना हर उम्र के श्रोता को दास बना लेती है। रामकथा के अदुभुत हंस पं० श्री रामकिंकर जी उपाध्याय को जिसने भी एक बार सुना है, वह रामकथा को परत दर परत युगीन सन्दर्भों से रामचरित को जोड़ने की उनकी अद्भुत वक्तव्य विधा पर लुट कर सभागार से बाहर निकलता है। पण्डित जी किसी भी प्रमाणपत्र के मुहताज नहीं हैं। देश-विदेश में रामकथा के सर्वयुगीन भाष्यकार के तौर पर अभिनन्दित हो चुके हैं।

ठेठ मन्द स्वर से वे प्रवचन शुरू करते हैं। पर प्रवचन के चरम क्षण में भी वे

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

टीप तक अपनी आवाज को नहीं ले जाते हैं। मध्यम पर आकर उनका शब्दाघात रमणरंभ में रम जाता है। जिस समय वे प्रसंग को उठाते हैं तो लगता है कहीं किसी ठंडी राख पर अलाव जलाने का किसी ने प्रयत्न भर किया हो। पर ज्यों-ज्यों प्रसंग आगे बढ़ता है उनका मुख मण्डल प्रदीप्त, उद्दीप्त, प्रभासित और अन्ततः प्रभामय हो जाता है। वे एक तेजपुञ्ज में बदल जाते हैं। जो लड़के हिप्पियों की तरह सड़कों पर फूहड और उद्दण्ड परिदृश्य प्रस्तुत करते रहते हैं वे पहिले ही 'श्रीराम' निनाद के साथ अत्यन्त सांस्कृतिक और सात्विक भारतीय हो जाते हैं। विलासिता के सपनों में खोई किशोरियाँ और रमणीरंभाएँ, विशुद्ध माँ, बहिन और विदुषी सा आकार ले बैठती हैं। अनुसूया, सीता और कौशल्या उनकी आँखों में उतर आती हैं। रामकथा के एक-एक पात्र का कूट-परीक्षण अपनी प्रबल मेधा के सहारे रामकिंकर जी ने इतना गहन कर लिया है कि वे सभी पात्र हमारी स्पर्श सीमा में हमें हमारे आसपास ही दिखाई देने लग जाते हैं।

जिस समय पण्डित जी मंच पर आकर विराजते हैं तो उनके हाथों को सहारा देने के लिये छोटे बड़े कई तकिये और गाव लगा दिये जाते हैं। बड़े लोट से पीठ टिकाये धवल वेश में यदि कोई उन्हें पहली बार देखता है तो ऐसा महसूस करता है मानो कोई कुबेर अपनी गद्दी पर आ बैठा है और लगता है कि मानो अभी-अभी सम्वाद सुनाई पड़ेगा। 'हाँ तो बुलाओ मुनीम जी को' अर्द्ध उन्मीलित नेत्रों से वे दृष्टि निक्षेप करते हैं और तन्मय एकाग्रता की चेतावनी पहिले ही क्षण अपने श्रोताओं को दे देते हैं। प्रसंग के बीच में किसी भी तरह का व्यवधान वे न तो पसन्द करते हैं, न सहन करते हैं। यदि व्यवधान अपरिहार्य हो तो वे प्रवचन रोक देते हैं। तब ऐसा भी क्षण आता है कि हजार-हजार श्रोता व्यवधानकर्त्ता पर खीज पड़ते हैं। रसभंग स्पष्ट हो जाता है। पण्डित जी अनवरत बोलते हैं। उन्हें निर्निमेष सुनना पड़ता है। यदि आपकी दृष्टिमात्र भी पण्डित जी के मुख पर से हट गई तो आपका बहुत कुछ खो जाएगा।

यदि आप उन्हें देखते हुये सुनते हैं तो आप धन्य हैं पर आप यदि कहीं ऐसी जगह उन्हें सुन रहे हैं जहाँ से आप उन्हें देख नहीं पाते हैं तो भी आप निहाल हैं। उन्हें देखना एक दर्शन है। उन्हें सुनना एक तृप्ति है। देश-विदेश के बड़े से बड़े लोग उनके आगे जिज्ञासु की तरह बैठ जाते हैं। छोटे लोग मुमुक्ष की तरह उन्हें देखते-सुनते रहते हैं। भाषा उनके पास सबके लिये एक ही है। भाषा और वाणी का अन्तर आपको देखना हो तो आप रामकिंकर जी को सुनिये। भाषा को वाणी तक ले जाना उनकी अपूर्व तपस्या है। उनके पास फालतू कुछ भी नहीं

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

है। जिस तरह रामकथा के अमर गायक तुलसी बाबा ने एक भी शब्द मानस में फालतू नहीं लिखा उसी तरह पं० रामकिंकर जी एक भी शब्द फालतू नहीं बोलते। विनोद के प्रसंग भी उनकी सुसंस्कृत भाषा से स्वस्थ हो जाते हैं। हर उम्र का श्रोता उनके विनोद को सही समय पर पा लेता है। भेड़ियों को भेड़ों की तरह घण्टों बिठाये रखना उनकी अद्भुत क्षमता है। रामकथा के हवन कुण्ड में उन्होंने अपनी उम्र को समिधा की तरह स्वाहा कर दिया है। जब वे प्रवचन के पश्चात मंच से उतरते हैं तो उनके चरण छूने का एक विह्वल सिलसिला शुरू हो जाता है। प्रासादों में ठहरना और उनके कँगूरे अपने चरणों तक झुका देना उनका प्रसाद है। शायद वे अकेले रामकथाकार हैं जिनकी प्रवचन सभाओं में कोई आरती नहीं होती, कोई प्रसाद नहीं बँटता। कोई चढ़ावा नहीं चढ़ता। सब धर्म के लोग उन्हें सुनते हैं। मर्मस्पर्शी स्थलों पर अनवरत अश्रु प्रवाह साधारण स्थिति है। मंच उनके खूब सजे-धजे होते हैं। रामकथा की पोथी उनकी छुअन के दायरे में ठीक उनके सामने रखी रहती है पर न वे उस पोथी को बाँचते हैं न खोलते हैं। उसे यदा कदा छू भर लेते हैं। प्रारम्भ और समापन पर वे घड़ी देख लेते हैं और एक क्षण में प्रवचन का उपसंहार कर देते हैं। परन्तु प्रसंग को प्रथम सिरे पर लाना नहीं भूलते। प्रसंग और पात्रों का गुम्फन जो भी उनसे सीख लेगा वह अमर हो जायगा, विवेचन और तर्क की परिधि को वे अपनी मुट्ठी में भींच लेते हैं। समाधान का क्षितिज उनकी आँखों में अंधा भी देख सकता है। जिस प्रसंग को छुयेंगे, आकाश बना देंगे। जिस पात्र पर हाथ रखेंगे, उसके अप्रकट को प्रकट कर देंगे।

रामकिंकर जी का पठनीय पक्ष श्रवणनीय पक्ष का विरोधी है। उन्हें आप जितना सुनेंगे उतना सुलझते जायेंगे। श्रोता की तरह आप उनको भाषा की व्यंजना तक आसानी से पहुंच जायेंगे। पर पाठक की तरह आप लक्षणा तक भी शायद ही पहुँचें। कानों के पास वे सुगम हैं। आँखों के आगे अगम हैं—

मुझे नहीं पता है कि आपने उन्हें सुना है या नहीं।
मुझे नहीं पता है कि आपने उन्हें देखा है या नहीं।

मेरा पक्का विश्वास है कि आप यदि 'रामकथा' का एक भी प्रसंग उनसे सुन लेंगे तो आपको 'भारत' का सर्वथा नया रूप देखने को मिलेगा। वे न तो रामायणी हैं न उपदेशक। कथावाचक तो वे हैं ही नहीं। वे रामकथा के भास्कर गायक हैं और केवल रामकिंकर जी हैं। वे इस समय सारे संसार में अपने जैसे

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अकेले हैं। स्वयं दासरथि राम भी यदि अपनी कथा इनके मुँह से सुन लेंगे तो वे भी कह पड़ेंगे साधु ! साधु !! और फिर दूसरे दिन वापस सभागार में अपना स्थान लेने समय से पहिले ही आ जायेंगे।

हमारे पुण्य प्रबल हैं कि हम रामकिंकर जी को अपने बीच रामकथा पर प्रवचन करते अपनी आँखों से देख रहे हैं। 'आँख' से मेरा तात्पर्य मात्र "चक्षु" नहीं। प्रवचन श्रवण वेला में उनके श्रोता का रोम-रोम आँख में बदल जाता है। उसे राम कथा में छिपा वह सब दिखाई देने लग जाता है जिसे वह हजारों वर्षों से नहीं देख पा रहा था। प्रवचन सुनकर जब रामकिंकर जी का श्रोता वापस लौटता है तब वह नहीं होता जो कि वह घर से प्रवचन के लिये चलते समय था। 'ठीक आप ही की तरह।

॥ जय श्रीराम ॥

सचिवालय, भोपाल
दिनांक २३ सितम्बर १९८०

राज्यमन्त्री
खाद्य एवं नागरिक पूर्ति (म० प्र०)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सहजता ही जिनकी प्रमुख विशेषता है

"आज का साहित्य सृजन तथा परिवेश दोनों कृत्रिमता से परिपूर्ण होता जा रहा है। साहित्यकार का परिवार तो वही है, जहां उसके विचारों को सम्बल मिलता है और पोषण होता है। जहाँ मुझे स्नेह मिला, वहीं मेरा परिवार बन गया और मैं आत्मीयजनों के बीच सुध-बुध खो बैठता हूँ।" ये भावोद्‌गार राष्ट्रीय कवि पं० सोहनलाल द्विवेदी ने अपने ७५ वें जन्म दिवस पर लखनऊ में आयोजित विगत अगस्त १९८० के एक विशेष समारोह में व्यक्त किये। समारोह के अध्यक्षीय सम्भाषण में सुप्रसिद्ध कथा शिल्पी श्री अमृतलाल नागर ने कहा—"पिछली पीढ़ी के जीवन और सृजन की प्रमुख विशेषता रही है—'सहजता'। द्विवेदी जी ने जनता में नवजागरण की ध्वनि फूँकी है और गांधीवादी विचारधारा का अनुसरण किया है। आपका कवि–मानस अव्यक्तिवादी, ग्रन्थिहीन और सहज–भाव विचारों से ओतप्रोत रहा है। द्विवेदी जी वय में मुझसे दस वर्ष बड़े हैं। मैं एक अनुज के रूप में उनका सदैव सम्मान करता रहा हूँ और उनका स्नेह-पात्र भी रहा हूँ।"

इसी समारोह का उद्‌घाटन करते हुए लखनऊ विश्वविद्यालय के कुलपति श्री गिरिजाप्रसाद पाण्डेय ने कहा—"आज के युग में जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में मूल्यों में विघटन हो रहा है। वैचारिक भाव बोध खंडित हो रहा है। ऐसी स्थिति में राष्ट्रकवि पं० सोहनलाल द्विवेदी जी की रचनायें आज भी उच्च सांस्कृतिक मूल्यों से जोड़ने में समर्थ हैं। द्विवेदी जी अपने युग की एक विभूति हैं। आप अपनी ओजस्वी वाणी द्वारा वर्तमान युग की मलिनता को धवल बनाते रहें और साहित्यिक परिवेश को प्रेरणा प्रदान करते रहें।"

कवि तथा पत्रकार दोनों रूपों में द्विवेदी जी का यशस्वी स्थान रहा है। कवि सम्मेलनों द्वारा हिन्दी तथा भारतीय संस्कृति के प्रचार–प्रसार में उनकी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रभावशाली भूमिका रही है। लखनऊ से प्रकाशित राष्ट्रीय दैनिक पत्र 'अधिकार' का सन् १९३८ से १९४२ तक तथा सुप्रसिद्ध 'बालसखा' का कुशल सम्पादन किया। पत्रकारिता के माध्यम से नवोदित रचनाकारों को पर्याप्त प्रोत्साहित किया। बाल साहित्य के क्षेत्र में पं० लल्लीप्रसाद पाण्डेय के साथ आपने जो कार्य किया, उससे हिन्दी बालसाहित्य में एक युग निर्माण हुआ। आपकी साहित्य सेवा, विद्वता एवं सर्जना से प्रभावित होकर राष्ट्रपति महोदय ने १९६९ में पद्मश्री की उपाधि से अलकृत किया। १९७३ में राजस्थान विद्यापीठ के सर्वोच्च सम्मान 'साहित्य चूड़ामणि' द्वारा सम्मानित और सन् १९७५ में कानपुर विश्वविद्यालय द्वारा डी० लिट् की मानद उपाधि से द्विवेदी जी विभूषित किये गये। अभी इसी वर्ष (१९८०) उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान ने विशिष्ट दीर्घकालीन साहित्य-रचना और हिन्दी सेवा के लिए पन्द्रह हजार रुपये की धनराशि प्रदान करते हुए सम्मानित किया है।

गत वर्ष मानस-संगम एकादश समारोह के दूसरे दिन द्विवेदी जी से सहज भाव में निवेदन किया कि आपकी अति प्राचीन 'भैरवी' जिसकी भूमिका भारतीय संस्कृति के अनन्य उपासक एवं हिन्दी के राजनैतिक मनीषी डा० सम्पूर्णानन्द ने लिखी थी, महाकवि तुलसीदास से सम्बन्धित अंश तथा अन्य यदाकदा तुलसी पर प्रकाशित रचनाओं का संकलन 'मानस-संगम' की ओर से 'तुलसीदल' नाम से प्रकाशित कर दिया जाये तो आपने इसकी स्वीकृति भी उसी सहज भाव से प्रदान की। इससे द्विवेदी जी की सरलता तथा हिन्दी परिवार के प्रति सद्भावना का अनुमान लगाया जा सकता है। जिस सहजभाव से आप मानस संगम के आयोजनों मे मंच पर घोषणा करते हैं कि 'यह हमारा मंच है हम सुनने के लिए आए हैं न कि कहने के लिए।' जनता के विशेष आग्रह पर ही कुछ क्षण रचना सुनाते हैं वरना देश-विदेश के मनीषियों, रचनाकारों से बोलने का आग्रह तथा परिप्रेक्ष्य में मंच का संचालन भी करते रहते हैं और आयोजन के पूर्व तथा बाद में व्यवस्था की पूरी जानकारी भी प्राप्त करते रहते हैं—कितनी आत्मीयता है !

द्विवेदी जी के गुरु, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय में 'तुलसी' को हिन्दी साहित्य का सम्राट कहने वाले सुविख्यात समालोचक आचार्य पं० रामचन्द्र शुक्ल थे। आचार्य शुक्ल का पूर्ण प्रभाव द्विवेदी जी की प्रस्तुत रचना 'तुलसीदल' के प्रति साहित्यिक दृष्टि से पूर्णतया स्पष्ट है :—

है शब्द शब्द में भरा भाव,
है छन्द छन्द में भरा ज्ञान,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

है वाक्य वाक्य में अमर वचन
वाणी में वीणा का विधान !

इतना ही नहीं आचार्य शुक्ल के हिन्दी और मानस भावों को द्विवेदी जी अपनी रचना में इस प्रकार व्यक्त करते हैं—

पर तुम भव का गौरव विसार
हिन्दी जननी के बढ़े द्वार,
सम्राज्ञी बना दिया उसको
जो थी भिखारिणी कल अपार,
रच रामचरित का विशद ग्रन्थ
तुम ज्योतित बनकर कोटि दीप
युग देश काल पर भुज प्रसार
मिलते आ प्राणों के समीप !

राष्ट्र के प्रति अपनी भावना को व्यक्त करते हुए कहते हैं—

गूँजो फिर बनकर राम नाम, रणवीरों के मन में अकाम।
नवराष्ट्र जागरण के युग में, तुलसी गूँजो तुम काम धाम ।।

समाज के हर वर्ग में तुलसी की महानता के प्रति—

क्या अती, व्रती क्या गृही रती, करते सबको गतिमति प्रदान।
मंदित स्वदेश, वंदित विदेश, हे तुलसी तुम युग-युग महान ।।

द्विवेदी जी कहते हैं कि युगों–युगों से तुलसी की महानता की गाथा अमर होकर घर–घर में गाई जा रही है—

आबाल बृद्ध नारी नर में रह-रह कर, क्या प्रात-प्रात क्या शाम-शाम।
तुलसी तुम गुंज रहे रह-रह, गृह-गृह में बनकर 'राम नाम' ।।

द्विवेदी जी की प्रस्तुत रचना देश के स्वातन्त्र्य युद्ध के समय लिखी गयी थी। उन्होंने गोस्वामी जी को संस्कृति–रक्षक के रूप में चित्रित किया —

अँधड़ वैभव के बहे घोर,
लहरे विलास की उठी रोर।
तुम सुदृढ़ पाल बन लोक पाल,
तब ले आये निज धर्म ओर ।।

द्विवेदी जी आगे कहते हैं—

अपनी गति मति अपनी संस्कृति,
अपनी गतिविधि होती न ज्ञान।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यदि तुम न क्रान्तिदर्शी भरते,
हिन्दी में हिन्दू धर्म प्राण ।।

पाठक स्वयं द्विवेदी जी की रचनाओं से गोस्वामी तुलसीदास के प्रति भाव भरे शब्दों से आत्मसात होंगे ।

सुविख्यात मानस मर्मज्ञ पं० रामकिंकर जी उपाध्याय को दूसरे तुलसी के रूप में द्विवेदी जी अपनी भावना व्यक्त करते रहे हैं । अतः प्रस्तुत पुस्तक आदरणीय पं० रामकिंकर जी को 'मानस–संगम' समर्पित करने में गौरव अनुभव कर रही है ।

रचनाओं के अनुसार भावपूर्ण रेखांकन प्रख्यात कला विदुषी श्रीमती डा. प्रेमा मिश्रा ने अपने व्यस्त क्षणों में रेखांकित किया–मैं किन शब्दों में उनका आभार प्रकट करूँ । उन्होंने 'मानस-संगम' की रामकथा प्रदर्शिनी का सुनियोजित ढंग से सार्वजनिक रूप से प्रदर्शन किया उसको दर्शकगण आज भी स्मरण करते रहते हैं । डा० प्रेमा जी द्वारा लखनऊ में आयोजित एकल प्रदर्शनी देखकर द्विवेदी जी ने अत्यन्त प्रभावित होकर प्रस्तुत पुस्तक में उनके रेखाचित्रों से साज-सज्जा की भावना मुझसे व्यक्त की थी ।

इस पुस्तक में दक्षिण भारत के हिन्दी विद्वान डा० यन० रामन नायर की चर्चा तथा आभार के बिना मैं इस प्रकाशन को अपूर्ण मानता हूँ । डा० नायर हिन्दी में रचनायें भी करते हैं, यह उनके विद्वतापूर्ण आमुख पढ़ने से पाठक स्वयं निर्णय कर सकेंगे । उन्होंने मेरी प्रार्थना को स्वीकार किया, मैं पुनः उनके प्रति कृतज्ञता ज्ञापन करता हूँ । पाठकों को यह जानकर प्रसन्नता होगी कि डा० नायर के अन्तर्गत कोचीन विश्वविद्यालय में द्विवेदी जी की कृतियों पर शोधकार्य हो रहा है ।

पुस्तक प्रकाशन में सर्वश्री साधुशरण वर्मा, प्रो० मदनमोहन शर्मा, प्रो० श्री नारायण त्रिपाठी, श्री जुगुल बाबू अग्रवाल, श्री ठाकुरप्रसाद अग्निहोत्री, राजकुमार त्रिपाठी, श्रीधर मिश्रा, हृदय गुप्ता, कुलदीप टण्डन एवं मनोज तिवारी का सक्रिय योगदान रहा है जिनके अथक परिश्रम से हम समय पर पुस्तक प्रकाशित कर सके ।

कार्तिक पूर्णिमा
सं० २०३७ विक्रमी

बद्रीनारायण तिवारी
संयोजक, 'मानस-संगम'

□

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

तुलसीदास

जब मुगल महीपों के बादल
छाये जीवन नभ में अपार,
दासता, पराजय गृह-विग्रह
से गहराया तम का प्रसार;

तब राम नाम का अमृत ले
आये गाते गौरव अमन्द,
मृत हत जनता को मिले प्राण
चमके तुम बन सौभाग्य चन्द्र;

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हिन्दू कुल का जब महापोत
था इस जग जलनिधि में अधीर,
तुम बने अचल आकाश दीप,
दिखलाया प्रतिपल सुगम तीर;

अँधड़ वैभव के बहे घोर
लहरें विलास की उठी रोर,
तुम सुदृढ़ पाल बन लोकपाल,
तब ले आये निज धर्म ओर।

गाते यदुपति के रूप गीत
आये थे प्रेमी – सूरदास,
जर्जरित धमनियों में हमने
पाया नव जीवन का विलास;

पर वह पौरुष वह बल विक्रम
जिससे जय मिलती अनायास,
दी शक्ति तुम्हीं ने शक्ति मूर्ति
तब उठे पुनः हम गिरे दास;

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पा राम नाम का विजय मंत्र
हम भूल गये निज देश काल,
उत्साह जगा साहस फूटा
फिर से नत उन्नत हुये भाल;

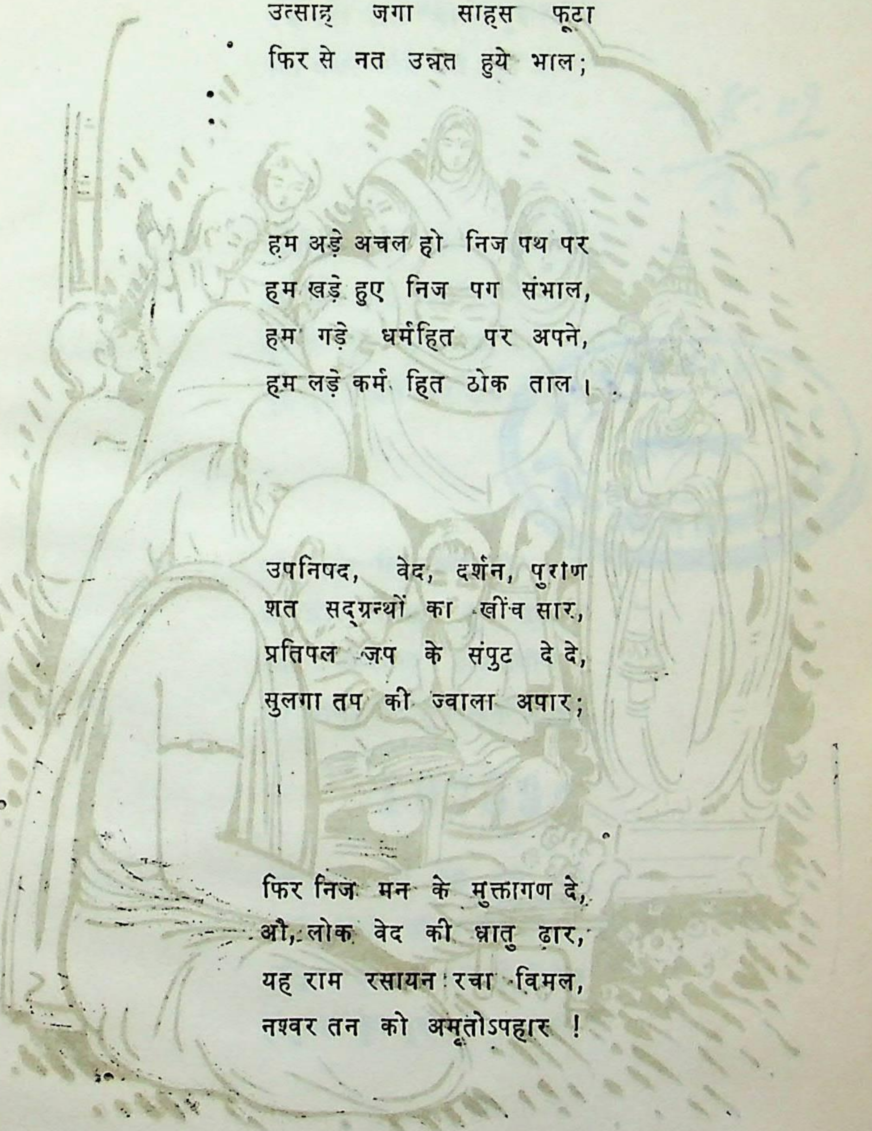

हम अड़े अचल हो निज पथ पर
हम खड़े हुए निज पग संभाल,
हम गड़े धर्महित पर अपने,
हम लड़े कर्म हित ठोक ताल।

उपनिषद, वेद, दर्शन, पुराण
शत सद्ग्रन्थों का खींच सार,
प्रतिपल जप के संपुट दे दे,
सुलगा तप की ज्वाला अपार;

फिर निज मन के मुक्तागण दे,
औ, लोक वेद की धातु ढार,
यह राम रसायन रचा विमल,
नश्वर तन को अमृतोऽपहार !

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हे वाल्मीकि के पुनर्जन्म
क्या नगर नगर क्या ग्राम ग्राम,
बजे रही भक्ति की मधुर बीन
क्या भवन भवन क्या धाम धाम;

आबाल वृद्ध नारी नर में
क्या प्रात प्रात क्या शाम शाम
तुलसी तुम गूंज रहे रह रह
गृह गृह में बन कर राम नाम;

क्या राज—भवन क्या रंक कुटीर
सब ओर समाहृत तुम समान
क्या ज्ञानी गृह विज्ञानी गृह,
युग वाणी के तुम बने गान;

103892

क्या अतीव्रती, क्या गृही रती
करते सबको गति मति प्रदान,
मन्त्रित स्वदेश वन्दित विदेश
हे तुलसी तुम युग युग महान।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

किस कुल में कब उत्पन्न हुये
किस देश भूमि को किया कान्त,
कब कहाँ रहे किस भाँति रहे
किससे पाये क्या वर नितान्त;

हम खोज खोज कर गये हार
हम जान जान कर हुए भ्रान्त,
तुम एक समस्या एक प्रश्न
तुम एक कुतूहल चिर-अशान्त !

कामी प्रताड़ना थी—कैसी ?
बन गये एक क्षण में अकाम,
निष्काम रहे आजीवन ही
फिर जगा न मन में कभी काम;

फिर कब तुम राजापुर लौटे
जब चले छोड़ कर धरा धाम,
सब भूमि बन गई जन्म भूमि,
जब रसना में रम गया राम !

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वह कौन निशा थी कौन प्रहर
जब एकाकीपन बना भार,
तुम डगमग हुए अडिग न रहे
चल पड़े अचानक दुर्निवार !

कब कहाँ चले ? किस ओर चले ?
कितने बन उपवन किये पार ?
क्या जान सके कुछ जान सके
आँखों में तो थी छवि अपार ।

क्या क्या आये मन में विचार ?
कैसा था अन्तर्द्वन्द्व घोर ?
कह सकता तुमको कौन छोड़ ?
तुम चले प्रणय की बँधे डोर ?

यह मन का मधु वह अधरामृत
लहरेगा बन विष की हिलोर,
आभास तुम्हें मिल सकता, तो
फिर भी जाते क्या उसी ओर ?

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इस पार, तुम्हारा पुर गृह था
उस पार प्रिया का रत्नधाम,
थी बीच खड़ी गंगा अथाह
श्रावण घन से प्लावित प्रकाम,

तरणी न कहीं था कर्णधार—
तुम कूद पड़े जल में अपार,
उस पार मुझे पल में कैसे
ले गया कौन तुमको उतार?

कितनी उत्सुकता उत्कण्ठा
से तुम पहुँचे पद तल अधीर,
मुख–चन्द्र कान्ति से करने को
शीतल अपना आकुल शरीर,

जिन आँखों में स्वागत वन्दन
का खींचा तुमने मधुर चित्र,
जिस मुख मण्डल में निमिष प्रहर
देखा तुमने निज मुख पवित्र;

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जिन अधरों के अधरामृत से
चाहा था तुमने अमृत-पान
उनमें ही कैसा परिवर्तन
कैसे निकले विष बुझे बाण !

"क्यों हुई न तुमको ग्लानि नाथ ?
क्यों आई तुम्हें न लाज नाथ ?
इतने कामाकुल बन अधीर
आये अन्धे बन आज नाथ !

इस हाड़ मांस के पुतले पर
तुमको है जितनी परम प्रीति,
इतनी यदि होती रामचरण
तो होती तुमको फिर न भीति !"

इस जगजीवन का सार मान
जिस पर अर्पित नित किये प्राण !
तज लोक लाज तज लोक भीति
आये जिसके गृह शरण मान,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उसने ही तन मन प्राणों पर
जब किया कठिन निर्मम प्रहार,
अनुभूति विभूति मिली उस दिन
तुम हुए उसी दिन निर्विकार !

उठती होगी तब तो न देह
चेतन भी होगा—जड़ीभूत,
जब लगे लौटने होगे तुम
यों निपट निराशा से प्रभूत,

दृगतल होगा घन अंधकार
पद तल पथ जिसका हो न छोर,
जड़ वाणी जड़ मन नयन प्राण
उठते न चरण होंगे कठोर !

हे तुलसी दृग में लिए अश्रु
लेकर उर में व्रण दीर्घघाव,
तुम चले प्रताड़ित किधर कहाँ
कैसे कब मन में जगे भाव ?

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

निन्दित तुलसी क्रन्द्रित तुलसी
तुम चले किधर मेरे निराश,
कर में ले दीपक बुझा हुआ
विक्षिप्त बने, मुखश्री उदास !

जर्जरित हृदय जर्जरित देह–
जर्जरित लिए ये क्षुब्ध प्राण !
कितने दुख से तुमने प्रेमी
तब कहीं किया होगा प्रयाण ?

किसके पुर में किसके उर में
कब कहाँ कहाँ पर ढूँढ़ त्राण ?
घूमे होंगे पागल तुलसी
अन्तस् में दाबे विषम वाण !

प्रेमी के उर की प्रेम प्यास, की
लगा सका है कौन थाह ?
प्रणयी के मन की साधों की
पा सका कौन है तट अथाह ?

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रेमी ने गहन निराशा का
पा सका अभी तक छोर कौन ?
इन प्रश्नों का उत्तर प्रतिध्वनि
इनका उत्तर है अमर मौन !

सद्भक्ति जगी उर में प्रपूर्ण
अनुकरण किया निज आर्य पंथ,
तब राम नाम के अक्षर से
लिखने बैठे निज आयु-ग्रन्थ ।

जीवन के निशिदिन-पृष्ठों पर
जिनमें अंकित था 'काम—काम,'
क्या परिवर्तन क्या आवर्तन ?
वे गूँज उठे बन 'राम--राम' !

नित संत शरण निज संत चरण
सदग्रन्थ पठन सदग्रन्थ मनन,
स्वाध्याय बना जीवन का क्रम
नित काम दमन नित राम रमण,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तुम चले विचरते तीर्थ तीर्थ
करने मन का मल पाप हरण,
काशी प्रयाग वृन्दावन में
हैं अमिट तुम्हारे बने चरण।

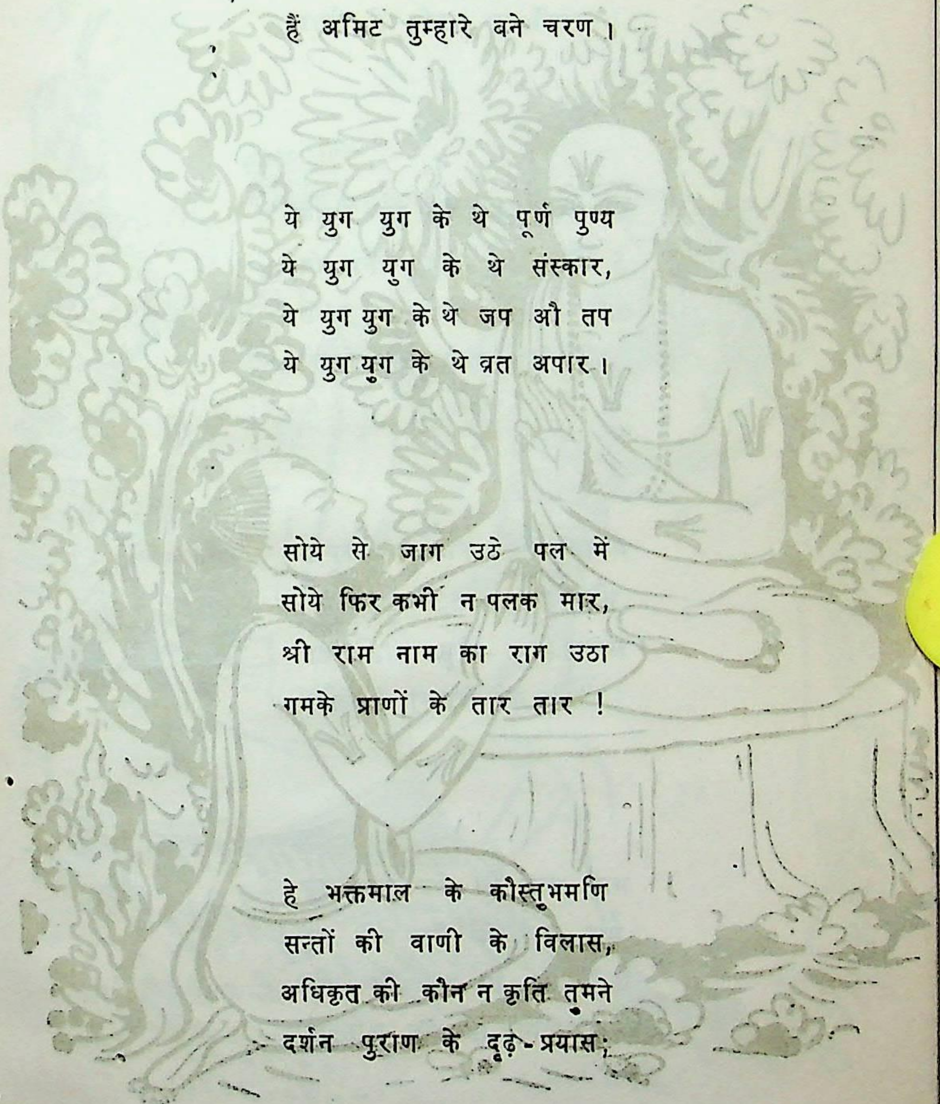

ये युग युग के थे पूर्ण पुण्य
ये युग युग के थे संस्कार,
ये युग युग के थे जप औ तप
ये युग युग के थे व्रत अपार।

सोये से जाग उठे पल में
सोये फिर कभी न पलक मार,
श्री राम नाम का राग उठा
गमके प्राणों के तार तार !

हे भक्तमाल के कौस्तुभमणि
सन्तों की वाणी के विलास,
अधिकृत की कौन न कृति तुमने
दर्शन पुराण के दृढ़-प्रयास;

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

है शब्द शब्द में भरा भाव
है छन्द छन्द में भरा ज्ञान;
है वाक्य वाक्य में अमर वचन
वाणी में वीणा का विधान !

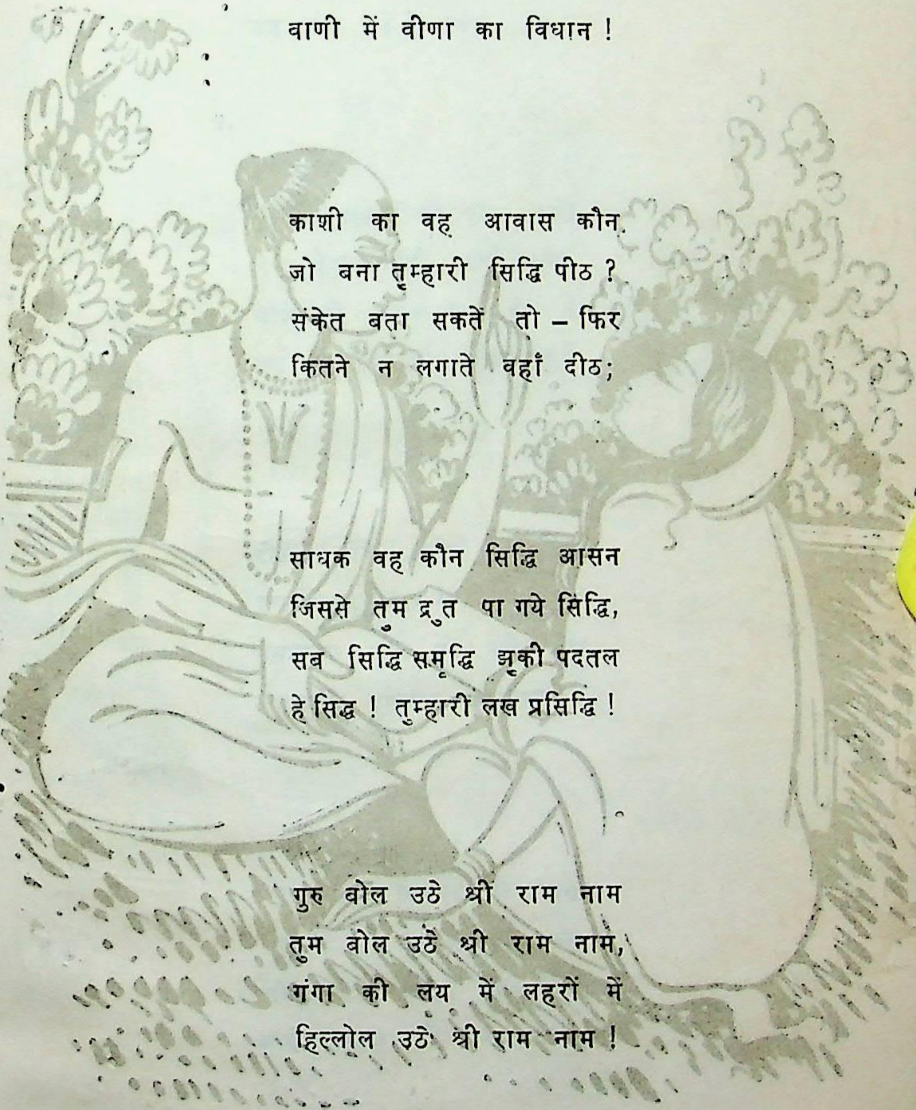

काशी का वह आवास कौन
जो बना तुम्हारी सिद्धि पीठ ?
संकेत बता सकतें तो – फिर
कितने न लगाते वहाँ दीठ;

साधक वह कौन सिद्धि आसन
जिससे तुम द्रुत पा गये सिद्धि,
सब सिद्धि समृद्धि झुकी पदतल
हे सिद्ध ! तुम्हारी लख प्रसिद्धि !

गुरु बोल उठे श्री राम नाम
तुम बोल उठे श्री राम नाम,
गंगा की लय में लहरों में
हिल्लोल उठे श्री राम नाम !

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

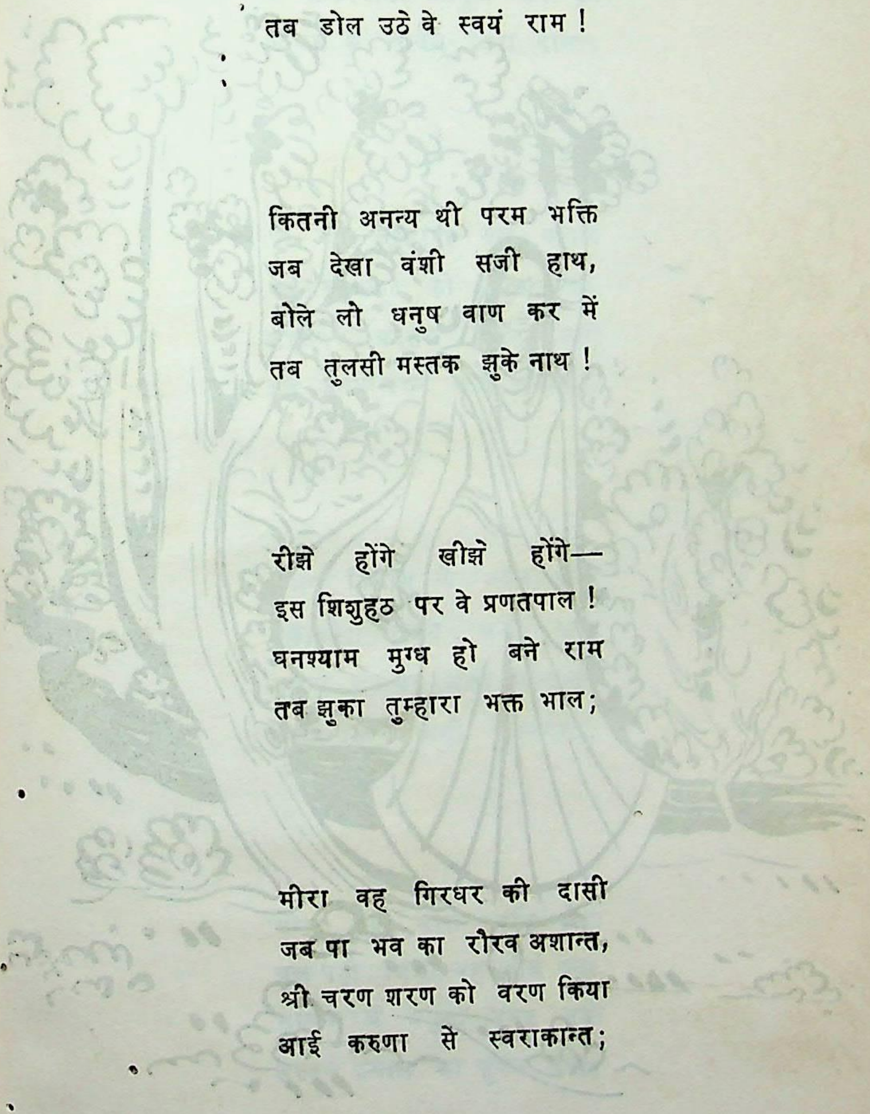

जन जन में मन मन में क्षण क्षण
कल्लोल उठे श्री राम नाम,
जब उठी तुम्हारी अन्तर्ध्वनि
तब डोल उठे वे स्वयं राम !

कितनी अनन्य थी परम भक्ति
जब देखा वंशी सजी हाथ,
बोले लो धनुष वाण कर में
तब तुलसी मस्तक झुके नाथ !

रीझे होंगे खीझे होंगे—
इस शिशुहठ पर वे प्रणतपाल !
घनश्याम मुग्ध हो बने राम
तब झुका तुम्हारा भक्त भाल;

मीरा वह गिरधर की दासी
जब पा भव का रौरव अशान्त,
श्री चरण शरण को वरण किया
आई करुणा से स्वराकान्त;

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

संकटमोचन दृढ़व्रती तुम्हीं ने
दे तब दृढ़ रति का विधान,
दे अभयदान आकुल उर को
जीवन में जीवन दिया दान।

पी गई तुम्हारा बल पाकर
वह कालकूट को अमृत मान,
वंशीधर पदतल प्रीति लगी
तब जनम मरण दोनों समान!

वैभव विलास के भवन त्याग
एकाकी निर्जन अर्द्ध रात,
यमुना तट पर बंशी ध्वनि सुन
चल पड़ी बावली पुलकगात;

मीरा वह भक्ति मूर्ति—मीरा
चल पड़ी जिधर वह तीर्थ बना,
मरुथल में यमुना उमड़ पड़ी
तरुतल तमाल का कुञ्ज घना;

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

करतालों की करतल ध्वनि में
जब बोल उठी वह कृष्ण कृष्ण,
भूमण्डल झूम उठा रस में
जल थल तरु तृण जागे सतृष्ण !

'धन धाम धरा परिवार तजो
जिससे न राम पद लगे प्रीति,
गूँजते तुम्हारे अमर वाक्य
प्रति पल प्राणों में बन प्रतीति;

जब प्रीति जगी सच्ची मन में
तब लोक लाज क्या, लोक भीति?
प्रिय रति अनन्य गति मति अनन्य
नित धन्य तुम्हारी प्रेम-नीति !

तुलसी, यदि तुम आते न यहाँ
हम ढोया करते धरा धाम,
वैभव विलास में मर मिटते
सूझता हमें कब सत्य काम !

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

निर्गुण निरीह के घन तम में,
भटका करते हम बार बार,
यदि सगुण रूप की दिव्य ज्योति
देते न मधुरतम तुम पसार !

विस्मरण हमें है वाल्मीकि
भूले गीता भूले पुराण,
दुर्गम दुर्बोध वेद हमको
वैदिक वाणी से हम अजान,

अपनी गति मति अपनी संस्कृति
अपनी गति विधि होती न ज्ञान,
यदि तुम न क्रान्तिदर्शी भरते
हिन्दी में हिन्दू–धर्म–प्राण;

शैवों वैष्णव में छिड़ा द्वन्द्व
तुम, सद्वैष्णव आये उदार !
बिछुड़े हृदयों को मिला दिया
हो गये एक बिछुड़े अपार;

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मिट गई कलह छा गई शान्ति
तुमने दी वह ममता पसार;
हिन्दू कुल की बिखरी लड़ियाँ
हो गई एक पा स्नेह तार !

संस्कृत का सिंहासन जिसमें
कवि कालिदास और व्यास भास,
आश्रय पा करके हुए विश्रुत
वीणा वाणी के बन विलास;

पर तुम भव का गौरव विसार
हिन्दी जननी के बढ़े द्वार,
सम्राज्ञी बना दिया उसको
जो थी भिखारिणी कल अपार;

रच राम चरित का विशद ग्रन्थ
तुम ज्योतित बनकर कोटि दीप,
युग देश काल पर भुज प्रसार
मिलते आ प्राणों के समीप।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

युग चक्र प्रवर्तन किया अचल
संगठित किया बिखरा समाज,
श्री राम नाम का शंख फूँक
जागरण प्रतिष्ठित किया आज;

मन्दिर के घण्टों से जागी
फिर आर्यों की आत्मा महान,
अभ्युदय हुआ निज गौरव का
विस्मृत संस्कृति में पड़े प्राण।

तुम आर्यों के जनगण नायक
करके प्रबुद्ध जनमत अबोध,
ले चले क्रान्ति पथ पर हमको
नित मुक्ति युक्ति की किया शोध;

जीवन भर ही मन प्राणों से
नित किया अनार्यों से विरोध,
कर गये अधिष्ठित आर्य धर्म
भर गये राम से आत्मबोध !

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जनगण के दुख में हो विगलित
उद्धार हेतु कर्तव्य मूढ़,
तुम चले ढूँढ़ने संजीवन
जो युग युग तक दे शक्ति गूढ़।

भैरवी राम गुण की गाई
जागे जिससे बुध और मूढ़,
तुम जाति रथी तुम राष्ट्र रथी
तब प्रगति देख गति मति विमूढ़;

गूँजो फिर बनकर राम नाम !
जनगण की वाणी में प्रकाम !
गूँजो फिर बनकर राम नाम !
बन्दी के प्राणों में ललाम !

गूँजो फिर बनकर राम नाम
रणवीरों के मन में अकाम !
नवराष्ट्र जागरण के युग में
गूँजो तुलसी तुम धाम धाम !

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गूँजो बापू के दृढ़ स्वर में
गूँजो गाँधी की दृढ़ गति में
गूँजो स्वदेश मतवालों की
वीणा वाणी में दृढ़ मति में

गूँजो नंगों भिखमंगों की
विप्लव तानों में धृति रति में,
नवराष्ट्र संगठन के युग में
गूँजो तुम कोटि चरण गति में !

दो हमको भूली कर्म शक्ति
दो हमको फिर से आत्मबोध,
दो हमें राम के मानस का
वह क्षत्रिय का अपमान क्रोध,

दो लक्ष्मण का वह भ्रातृभाव
हम बढ़ें, सुदृढ़ हो जाति बोध,
ले चलो हमें जययात्रा में
कवि बनो राष्ट्रकवि राष्ट्रबोध !

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दो नव चेतन दो नव जीवन
दो संजीवन दो देशभक्ति,
दो नित्य सत्य हित लड़ने की
तन मन प्राणों में आत्मशक्ति;

दो महावीर का बल विक्रम
लाँघ समुद्र त्यागें अशक्ति
सीता स्वतन्त्रता गृह आवे
हो भस्म स्वर्ण लंका विरक्ति

जो राम राज्य गाया तुमने
छाया है जिसका यश वितान,
थे राव रंक सब सुखी जहाँ
थे ज्ञान कर्म से मुखर प्राण ;

युग-युग की दृढ़ श्रृंखला तोड़
आया स्वराज्य का नव विहान,
इस राष्ट्र जागरण के युग में
कवि उठो पुनः तुम बन महान !

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गोस्वामी तुलसीदास के प्रति

दिल्लीश्वर का
कहाँ आज मरकत सिंहासन ?
भौम राज्य वह
उच्च भवन, चारण, बन्दीजन ?
धूलि धूसरित
खड़े आज खंडहर बन रजकन,
बुझा विभव–
वैभव प्रदीप, कैसा परिवर्तन !
महाकाल का
वक्ष चीर कर किन्तु निरन्तर,
सत्य सदृश
तुम अचल खड़े हो अवनी तल पर
रामचरित--
मणि रत्न दीप, घर-घर में भास्कर,
वितरित करता
ज्योति, युगों का तम लेता हर–
आज विश्व–उर
के सिंहासन में मंडित,
दीप्तमान तुम
अतुल तेज से, कान्ति अखंडित,
वाणी वाणी में,
गुञ्जित हो बन पावन स्वर,
आज तुम्हीं,
कवि श्रेष्ठ अजर हो अमर धरा पर ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अकबर और तुलसीदास

अकबर और तुलसीदास
पैदा हुए एक समय, एक देश
कहता है इतिहास !
'अकबर महान !'
का गूँजता था कीर्तिगान
वैभव प्रसाद बड़े
जो थे यहाँ सब खड़े
ध्वंस बने आज पड़े ।
किन्तु कवि तुलसीदास,
रामचरित का प्रासाद
अब भी है अचल खड़ा
अब भी है अडिग खड़ा
ऊर्जा उत्साह बड़ा
देता है अविराम ।
एक था सम्राट
जिसका वैभव विराट ।
एक कवि तुलसीदास
कौड़ी भी नहीं पास ।
किन्तु, आज
महाकालों की ताल चीर
गूँजती है नृपति की नहीं,
कवि की वाणी गंभीर,
हरती भव व्यथा पीर ।
लगता है :
अकबर महान् मृत !
तुलसीदास अमृत !!

पुस्तकालय गुरुकुल काँगड़ी विश्वविद्यालय
103802

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

GURUKUL KANGRI LIBRARY

	Signature	Date
Acces on		
Class on	[illegible]	24-7-2000
Cat on	[illegible]	24.7.2k
Tag etc	[illegible]	,,
Filing	[illegible]	,,
E.A.R	[illegible]	18-9-2000
Any other	[illegible]	24.7.2000
Checked	[illegible]	1-8-2000

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मानस संगम रजत जयन्ती वर्ष '९३ के अवसर पर

नव प्रकाशन

- ☐ प्रहरी : सम्पादक-डॉ० बद्री नारायण [illegible]
- ☐ शहीद उपवन : सम्पादक-डॉ० रमेश [illegible]
- ☐ मानस मोती (चतुर्थ संस्करण), : [illegible] मदन मोहन शर्मा
- ☐ राघव राग (पंचम संस्करण), : [illegible] मालवीय
- ☐ तुलसी काव्य अतीत और वर्तमान का [illegible] (द्वितीय संस्करण)
  लेखक – [illegible] चन्द्र दीक्षित
- ☐ रामकथा और मुस्लिम साहित्यकार ([illegible] संस्करण) :
  (उ० प्र० हिन्दी संस्थान द्वारा पुरस्कृत) सम्पादक–बद्री नारायण तिवारी
- ☐ रामायण कथा (बंगला रामायण) : लेखिका – गौरी बहन
- ☐ राम बावनी (द्वितीय संस्करण) : रचयिता – राजेन्द्र नाथ चतुर्वेदी
- ☐ तुलसी दल (द्वितीय संस्करण) : रचयिता–राष्ट्रकवि सोहन लाल द्विवदी
- ☐ गोस्वामी तुलसी दास समाज के पथ प्रदर्शक (तृतीय संस्करण) :
  सम्पादक–बद्री नारायण तिवारी
- ☐ व्यंग्य चित्रकारों की दृष्टि में तुलसी साहित्य (द्वितीय संस्करण) :
  (हिन्दी पत्रकारिता में व्यंग्य चित्रकारिता का इतिहास)
  सम्पादक – बद्री नारायण तिवारी
- ☐ अन्तर्राष्ट्रीय वार्षिक पत्रिका 'मानस संगम' : सम्पादक–मदन मोहन शर्मा
- ☐ नयी कविता के नाट्य काव्यों में राम कथा का स्वरूप :
  लेखक – डॉ० रहमत उल्लाह एवं श्रीमती सरोज तिवारी
- ☐ अतीत के मुखरित चित्र — लेखक–बद्री नारायण तिवारी
- ☐ राम कथा के उपेक्षित पात्र एवं वर्तमान में प्रासंगिकता
  सम्पादक–बद्री नारायण तिवारी
- ☐ अब किसे बनवास दोगे (द्वितीय संस्करण) रचयिता डॉ० शैलेश जैदी

> 'मानस संगम' की पुस्तकें मेरे पुस्तकालय की शोभा होंगी।
>
> — हरिवंश राय बच्चन

– प्राप्ति स्थान –

● **बद्री नारायण तिवारी**
संयोजक – 'मानस संगम'
प्रयाग नारायण शिवाला,
कानपुर

● **सर्वोदय साहित्य स्टाल**
प्लेट फार्म नं० १
कानपुर सेन्ट्रल, कानपुर

● **साहित्य निकेतन, साहित्य रत्नालय**
श्रद्धानन्द पार्क के सामने
पिसिस बाजार, कानपुर

● **हृदय गुप्त**
जनरल मर्चेन्ट शाप
प्रयाग नारायण शिवाला
कानपुर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar